सुता बिरोचन की हुती, दीरघजिह्व नाम।
सुरनायक सा संहरी, परम पापिनी बाम।।
परम पापिनी बाम, बहत उपजी कविमाता।
नारायन सों हती, चक्र चिन्तामनि दाता।।
नारायन सों हती, सकल द्विज दूषन सयुत।
त्यौं सब त्रिभुवननाथ, ताड़का मारा सह सुत।।8।।

शब्दार्थ—सुता = पुत्री। बिरोचन = एक राक्षस का नाम। हुती = थी। सुरनायक = इन्द्र। संहरी = मारी। बाम = स्त्री। बहुरि = फिर। कविमाता = शुक्राचार्य की माता। हती = मारी। नारायण सौं = नारायण की सौगंध। द्विज = ब्राह्मण। दूषण = शत्रुता। संजुत = सहित। सह पुत्र = पुत्र के साथ, मारीच के साथ।

प्रसंग—इस छन्द में महर्षि विश्वामित्र ने उदाहरण देकर राम को बताया है कि पापिनी नारी के वध में कोई पाप नहीं होता।

व्याख्या—विरोचन राक्षस की एक पुत्री थी जिसका नाम दीर्घजिह्व था। वह अत्यन्त पाप करने वाली स्त्री थी, इसलिए इन्द्र ने उसका संहार किया। इसके पश्चात् उसने फिर शुक्राचार्य की माता के रूप में जन्म लिया। वह भी अत्यन्त पाप करने वाली स्त्री थी। अपने सुदर्शन चक्र से लोगों को चिंतामणि का-सा सुख देने वाले नारायण ने उसका वध किया। मैं नारायण की सौगान्ध खाकर कहता हूँ कि हे राम! यह ताड़का समस्त ब्राह्मणों की शत्रुता से युक्त है; अर्थात् यह सब ब्राह्मणों से द्वेष रखती है और अवसर पाकर अकारण ही उनका नाश करती है। अतः हे त्रिलोकीनाथ! इसके पुत्र मारीच के साथ इसी का भी वध करो।

विशेष—त्रिभुवननाथ सम्बोधन से राम का ईश्वरत्व मुखरित है।

अलंकार—यमक, सहोक्ति।